

Mains Matrix

Table of Content

- 1.लंबित मामलों का संकट जारी, सर्वोच्च न्यायालय में केस बैकलॉग अब तक के उच्चतम स्तर पर
- 2.नेपाल में जनरेशन ज़ी के प्रदर्शनों के पीछे की प्रेरणाएँ
- 3.वैश्विक प्लास्टिक प्रदूषण संकट कितना गंभीर है?
- 4.भारत को खाद्य उत्पादन में विविधीकरण को तेज़ करने में अधिक निवेश करना चाहिए: FAO मुख्य अर्थशास्त्री
- 5.अशांत होती दुनिया में भारत की स्थिति निर्धारण

1.लंबित मामलों का संकट जारी: सर्वोच्च न्यायालय में बैकलॉग अब तक के उच्चतम स्तर पर

स्रोत: राष्ट्रीय न्यायिक डाटा ग्रिड

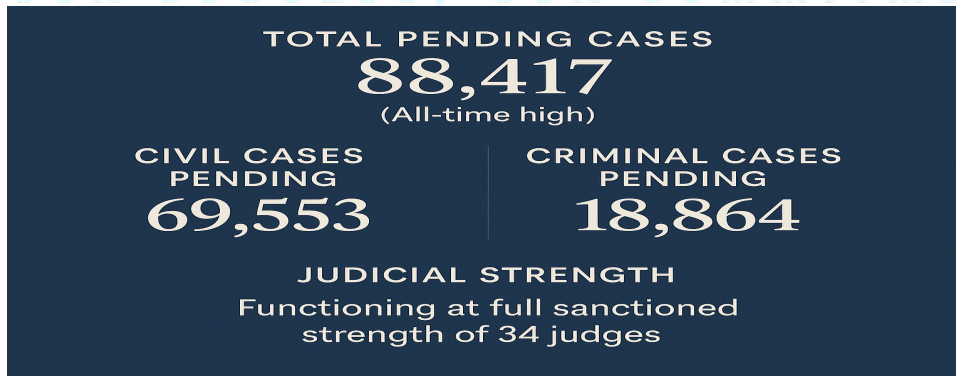
मुख्य सारांश एवं वर्तमान स्थिति

अगस्त 2024 का प्रदर्शन

- दाखिल (फाइल किए गए) मामले: 7,080
- निस्तारित मामले: 5,667
- निस्तारण दर (अगस्त): दाखिल मामलों का 80-84% (परिणामस्वरूप बैकलॉग में शुद्ध वृद्धि)।

2025 वार्षिक डेटा (वर्ष-तिथि तक)

- दाखिल मामले: 52,630
- निस्तारित मामले: 46,309
- निस्तारण दर (वार्षिक): 88%



संदर्भ एवं बैकलॉग कम करने के प्रयास

- **गर्मी की छुट्टियों की पहल:** मुख्य न्यायाधीश बी.आर. गवई ने ग्रीष्मावकाश (23 मई से जुलाई) को “आंशिक कार्य दिवस” के रूप में नामित किया।
- **उठाए गए कदम:** इस अवधि में 21 पीठों ने कार्य किया, जिनमें CJI और पाँच वरिष्ठतम न्यायाधीश शामिल रहे और उन्होंने मामलों की सुनवाई एवं निस्तारण किया।
- **नेतृत्व परिवर्तन:** वर्ष 2025 में दो मुख्य न्यायाधीश रहे हैं, और तीसरे (न्यायमूर्ति सूर्यकांत) के नवंबर अंत में शपथ लेने की संभावना है।
- **ऐतिहासिक संदर्भ:** महामारी के बाद से लंबित मामलों की समस्या लगातार बनी हुई है, विशेषकर 2023 से। 2024 की इसी अवधि में पिछला उच्च स्तर 82,000 से अधिक मामलों का था।

प्रणालीगत चुनौतियाँ एवं बयान

- **रिक्ति प्रबंधन:** लगातार मुख्य न्यायाधीशों (चंद्रचूड़, खन्ना, गवई) ने सुप्रीम कोर्ट में न्यायिक रिक्तियों को न्यूनतम रखा है।
- **कोलेजियम प्रस्ताव:** नवंबर 2023 के एक प्रस्ताव में “विशाल कार्यभार” पर चिंता जताई गई और कहा गया कि “बढ़ते लंबित मामलों” के कारण अदालत “एक भी रिक्ति बर्दाश्त नहीं कर सकती।” प्रस्ताव ने यह भी रेखांकित किया कि “पूर्ण कार्यशील न्यायाधीश-शक्ति” आवश्यक है ताकि किसी भी समय कोई रिक्ति न रहे।
- **सरकार का सहयोग:** हाल के महीनों में सरकार ने कोलेजियम की नियुक्ति संबंधी सिफारिशों को बिना विलंब (अक्सर 48 घंटों के भीतर) मंजूरी दी है। इसके बावजूद, लंबित मामलों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

2. नेपाल में जनरेशन जी प्रदर्शनों के पीछे की प्रेरणाएँ

नेपाल में हाल ही में हुए जनरेशन जी (Gen Z) के प्रदर्शनों की लहर सरकार की एक विशेष कार्रवाई से भड़की, जिसने गहरी जड़ें जमा चुकी असंतोष की परतों को सामने ला दिया।

1. तात्कालिक कारण: सोशल मीडिया बैन और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर अंकुश

सरकार द्वारा प्रमुख सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों को ब्लॉक करने की कार्रवाई को खुलेआम सेंसरशिप और असहमति को दबाने के प्रयास के रूप में देखा गया। इसके अलावा, ये प्लेटफॉर्म कई युवा नेपाली (कंटेंट क्रिएटर्स, इन्फ्लुएंसर्स, छोटे व्यवसाय) की आर्थिक आजीविका से जुड़े हैं, इसलिए यह प्रतिबंध उनकी आय पर सीधा खतरा था।

2. मुख्य शिकायत: व्यवस्था-गत भ्रष्टाचार और भाई-भतीजावाद

प्रदर्शनकारियों ने राजनीतिक अभिजात वर्ग द्वारा निजी लाभ के लिए सार्वजनिक पद के दुरुपयोग पर गहरी नाराज़गी जताई। यह आक्रोश “नेपो किड्स” फ़ेनोमेना से और बढ़ा, जहाँ राजनेताओं के बच्चों की

आलीशान जीवनशैली, जो सोशल मीडिया पर प्रदर्शित होती है, असमानता और अवांछित विशेषाधिकार का शक्तिशाली प्रतीक बन गई।

3. केंद्रीय माँगें: जवाबदेही और राजनीतिक सुधार

आंदोलन ने केवल वादों पर नहीं बल्कि ठोस कार्रवाइयों की माँग की—जैसे स्वतंत्र भ्रष्टाचार जाँच, उच्च-स्तरीय इस्तीफे और सरकारी सुधार। यह माँग “दण्डमुक्ति की संस्कृति” पर गहरी असंतोष से उत्पन्न हुई, जहाँ भ्रष्टाचार कांडों पर चर्चा तो होती है, लेकिन समाधान शायद ही कभी निकलता है।

4. गुप्त कारण: आर्थिक निराशा और अवसरों की कमी

कई युवाओं के सामने गुणवत्तापूर्ण स्थानीय नौकरी के अवसरों की गंभीर कमी है। विदेश जाकर रोज़गार ढूँढने की विवशता राज्य की युवाओं को अवसर देने में असफलता की लगातार याद दिलाती है।

5. बढ़ाने वाला तत्व: डिजिटल कनेक्टिविटी और ऊँची अपेक्षाएँ

डिजिटल नेटिव होने के कारण जनरेशन ज़ी वैश्विक मानकों (शासन और अधिकारों को लेकर) से भलीभाँति परिचित है। नेपाल की स्थिति की तुलना वे इन्हीं मानकों से करते हैं, जिससे असंतोष बढ़ता है। सोशल मीडिया भ्रष्टाचार और असमानता को तेज़ी से उजागर कर व्यापक असंतोष को साझा आंदोलन में बदल देता है।

6. जनसांख्यिकी: पुरानी राजनीति से निराश युवा आबादी

नेपाल की आबादी का बड़ा हिस्सा युवा है, लेकिन वे पूरी तरह से सत्ता और निर्णय-प्रक्रिया से बाहर महसूस करते हैं। स्थापित राजनीतिक दल उन्हें जड़, भ्रष्ट और दशकों से असफल साबित हुए पुनर्नवीनीकरण नेताओं द्वारा संचालित प्रतीत होते हैं। इससे नई और निष्कलंक नेतृत्व की इच्छा पनपती है।

7. तनाव बढ़ाने वाला कारण: सरकारी दमन और कठोर प्रतिक्रिया

पुलिस और सेना की सख्ती, कर्फ्यू और गिरफ्तारी ने स्थिति को शांत करने के बजाय और भड़का दिया। उन प्लेटफॉर्मों को ब्लॉक करना, जिन पर आंदोलन का संगठन होता था, दमनकारी कदम माना गया जिसने प्रदर्शनकारियों की शंकाओं को पुख्ता कर दिया कि सरकार अधिनायकवादी प्रवृत्ति अपना रही है।

सारांश

ये प्रदर्शन एक डिजिटल रूप से जुड़े, आर्थिक रूप से चिंतित और राजनीतिक रूप से मोहभंग पीढ़ी का सशक्त विस्फोट थे। उनकी डिजिटल अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर सीधा हमला व्यापक आंदोलन का कारण बना, जिसने जवाबदेही, व्यवस्था-गत भ्रष्टाचार का अंत और ठोस राजनीतिक बदलाव की माँग उठाई।

3. वैश्विक प्लास्टिक प्रदूषण संकट कितना गंभीर है?

संकट का पैमाना और गंभीरता

उत्पादन और खपत

- प्लास्टिक उत्पादन 2000 से 2019 के बीच दोगुना होकर 450 मिलियन टन वार्षिक तक पहुँच गया।
- केवल 2020 में ही 500 मिलियन टन प्लास्टिक का उत्पादन या उपयोग हुआ।

कचरा उत्पादन

- वार्षिक प्लास्टिक कचरा 353 मिलियन टन तक पहुँच गया।
- लगभग दो-तिहाई प्लास्टिक कचरे की आयु पाँच वर्षों से भी कम है।
- स्रोत: 40% पैकेजिंग, 12% उपभोक्ता सामान, 11% कपड़े और वस्त्र।

भविष्य का अनुमान

- यदि वर्तमान प्रवृत्तियाँ जारी रहती हैं तो 2060 तक वैश्विक प्लास्टिक कचरा लगभग तीन गुना होकर 1.2 बिलियन टन तक पहुँच सकता है।

पर्यावरणीय रिसाव

- केवल 9% प्लास्टिक कचरा रिसायकल होता है।
- 19% जलाया जाता है।
- 50% लैंडफिल (कूड़ा स्थलों) में चला जाता है।
- 22% अपशिष्ट प्रबंधन से बच निकलता है और कूड़ेदान, खुले गड्ढों या स्थलीय और जलीय पर्यावरण में प्रदूषण फैलाता है।

प्रमुख प्रभाव और समस्या की गंभीरता

1. **व्यापक प्रदूषण:** प्लास्टिक माइक्रो और नैनो प्लास्टिक में टूटकर ग्रह के हर हिस्से को प्रदूषित करता है—माउंट एवरेस्ट से लेकर गहरे महासागर तक।
2. **महासागर संकट:**
 - हर वर्ष 1.1 करोड़ टन प्लास्टिक महासागरों में प्रवेश करता है।
 - अनुमानतः 20 करोड़ टन प्लास्टिक पहले से ही समुद्री पर्यावरण को प्रदूषित कर रहा है।
 - वर्तमान दर पर, सदी के मध्य तक महासागरों में मछलियों से अधिक प्लास्टिक हो सकता है।
3. **जलवायु परिवर्तन:** प्लास्टिक वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का 3.4% योगदान करता है।
 - अनुमान: 2040 तक प्लास्टिक का उत्पादन, उपयोग और निस्तारण वैश्विक कार्बन बजट का 19% तक इस्तेमाल कर सकता है।

प्रस्तावित उपाय और समाधान

1. **अंतरराष्ट्रीय सहयोग और नीतियाँ**
 - सभी संयुक्त राष्ट्र सदस्य देशों ने प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करने के लिए एक कानूनी रूप से बाध्यकारी अंतरराष्ट्रीय समझौते पर सहमति जताई है।
 - यह जलवायु, महासागर और पारिस्थितिकी तंत्र से जुड़े संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण है।

- UNEP का लक्ष्य: दो दशकों के भीतर प्लास्टिक कचरे को 80% तक कम करना।
- 2. **सरकार और उत्पादकों की भूमिका**
 - उत्पादन को सीमित करें और अनावश्यक वस्तुओं (विशेषकर सिंगल-यूज प्लास्टिक) को समाप्त करें।
 - आर्थिक साधनों का उपयोग करें:
 - विस्तारित उत्पादक ज़िम्मेदारी (EPR) योजनाएँ।
 - लैंडफिल टैक्स और दहन (incineration) टैक्स ताकि रिसाइक्लिंग को प्रोत्साहन मिले।
 - डिपॉज़िट-रिफंड सिस्टम और “पे-एज़-यू-थ्रो” सिस्टम।
 - अपशिष्ट प्रबंधन में सुधार:
 - रिसाइक्ल्ड प्लास्टिक के लिए लाभदायक बाज़ार तैयार करें (वर्तमान में केवल 6% का पुनर्चक्रण होता है)।
 - रिसाइक्लिंग तकनीकों में निवेश और सुधार करें।
- 3. **व्यक्ति और समाज की भूमिका**
 - व्यक्तियों को अतीत में उपयोग किए जाने वाले हरित विकल्प अपनाने होंगे।
 - मीडिया जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

सार / निष्कर्ष

- **समस्या:** प्लास्टिक प्रदूषण एक गंभीर वैश्विक संकट है जो अनियंत्रित उत्पादन और कचरे के कारण पारिस्थितिकी तंत्र, सतत विकास और मानव स्वास्थ्य पर गहरा असर डाल रहा है।
- **समाधान:** इसे सुलझाने के लिए तत्काल अंतरराष्ट्रीय कदम, रिसाइक्लिंग में सुधार, अनावश्यक प्लास्टिक उत्पादन पर रोक और व्यक्तियों व सरकारों द्वारा ज़िम्मेदाराना व्यवहार आवश्यक है।

How to use

सामान्य अध्ययन पेपर II (जीएस- II) - शासन, संविधान, राजव्यवस्था, सामाजिक न्याय और अंतराष्ट्रीय संबंध

- **अंतराष्ट्रीय संबंध:**
 - प्लास्टिक प्रदूषण पर अंतरसरकारी वार्ता समिति (Intergovernmental Negotiating Committee on Plastic Pollution) और एक कानूनी रूप से बाध्यकारी अंतराष्ट्रीय समझौते की दिशा में प्रगति वैश्विक शासन और बहुपक्षवाद का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।
 - आप इसे निम्नलिखित प्रश्नों में उपयोग कर सकते हैं:
 - "वैश्विक पर्यावरणीय समझौतों की चुनौतियाँ और सफलताएँ।"
 - "वैश्विक शासन में संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों (जैसे UNEP) की भूमिका।"

- **शासन:**

- लेख में उल्लिखित समाधान (EPR, कराधान नीतियाँ) सुशासन के उपकरण हैं।
- आप इसका उपयोग यह दिखाने के लिए कर सकते हैं कि सकारात्मक व्यवहार को प्रोत्साहित करने और प्रदूषण को हतोत्साहित करने के लिए सरकारी नीतियों को कैसे डिजाइन किया जा सकता है।

उत्तरों में इस जानकारी को एकीकृत करने का तरीका:

- **डेटा को फोर्स मल्टीप्लायर के रूप में उपयोग करें:** केवल यह न कहें कि "प्लास्टिक उत्पादन अधिक है।" बल्कि कहें, "प्लास्टिक उत्पादन 2000 से दोगुना होकर 450 मिलियन टन प्रति वर्ष हो गया है, फिर भी केवल 9% रीसाइकल होता है।" यह आपके तर्क में जबरदस्त वजन जोड़ता है।
- **मुख्य पहलों का उल्लेख करें:** केवल "एक वैश्विक समझौता" कहने के बजाय, विशिष्ट रूप से कहें: "प्लास्टिक प्रदूषण पर अंतरसरकारी वार्ता समिति द्वारा विकसित किया जा रहा कानूनी रूप से बाध्यकारी अंतराष्ट्रीय समझौता"। यह सटीकता और ज्ञान को दर्शाता है।
- **विशिष्ट नीति के नामों का उपयोग करें:** "आर्थिक उपकरण" कहने के बजाय, सटीक शब्दों का प्रयोग करें: विस्तारित निर्माता उत्तरदायित्व (EPR), लैंडफिल कर, डिपॉजिट-रिफंड योजनाएँ। यही वह भाषा है जिसकी UPSC को अपेक्षा होती है।
- **एसडीजी से लिंक करें:** हमेशा उल्लेख करें कि प्लास्टिक प्रदूषण से निपटना संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से:
 - SDG 12 (जिम्मेदार खपत और उत्पादन)
 - SDG 13 (जलवायु कार्रवाई)
 - SDG 14 (जल के नीचे जीवन)
 - SDG 15 (स्थलीय जीवन)

सामान्य अध्ययन पेपर III (जीएस- III) - प्रौद्योगिकी, आर्थिक विकास, जैव विविधता, पर्यावरण, सुरक्षा और आपदा प्रबंधन

यह लेख जीएस- III के पर्यावरण खंड के लिए सीधा स्रोत है, जो विशिष्ट डेटा और अवधारणाएँ प्रदान करता है।

- **जैव विविधता और पर्यावरण:**

- **प्रदूषण और गिरावट:** लेख का मूल विषय। यह उत्पादन (450 MT), अपशिष्ट (353 MT), पुनर्चक्रण (केवल 9%), और रिसाव (22%) पर चौंका देने वाले डेटा पॉइंट प्रदान करता है।
- **पारिस्थितिकी तंत्र के लिए खतरा:** समुद्री जीवन पर प्रभाव (प्रति वर्ष 11 MT समुद्र में प्रवेश) और माइक्रोप्लास्टिक के सर्वव्यापक प्रकृति का विवरण देता है।

- **संरक्षण:** प्रस्तावित वैश्विक और राष्ट्रीय समाधान जलीय और स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण से सीधे जुड़े हुए हैं।
- **आपदा प्रबंधन:**
 - **मानवजनित जोखिम:** प्लास्टिक प्रदूषण को एक मंद-गति से होने वाली, मानव निर्मित पर्यावरणीय आपदा के रूप में देखा जा सकता है, जो नदियों (बाढ़ का खतरा) को जाम करती है, मृदा स्वास्थ्य को प्रभावित करती है और वन्यजीवों को नुकसान पहुँचाती है।
- **विज्ञान और प्रौद्योगिकी:**
 - **समाधान के रूप में प्रौद्योगिकी:** लेख स्पष्ट रूप से बेहतर रीसाइक्लिंग प्रौद्योगिकियों में निवेश और कम वैश्विक रीसाइक्लिंग दर (6%) को संबोधित करने के लिए रीसाइकल उत्पादों के लिए बाजार बनाने का आह्वान करता है।
- **आर्थिक विकास:**
 - **सतत विकास के लिए चुनौती:** रैखिक प्लास्टिक अर्थव्यवस्था (ले-बनाओ-फेंको) एक ऐसा मॉडल है जो सतत विकास का विरोध करती है।
 - **सतत अर्थव्यवस्था के लिए नीति उपकरण:** EPR और कर जैसे समाधान आर्थिक उपकरण हैं जो बाजार शक्तियों को पर्यावरणीय लक्ष्यों के साथ संरेखित करते हैं, जो हरित अर्थशास्त्र का एक प्रमुख पहलू है।

4. भारत को खाद्य उत्पादन में विविधीकरण को तेज करने में अधिक निवेश करना चाहिए: एफएओ के मुख्य अर्थशास्त्री

भारत की खाद्य सामर्थ्य पर प्रमुख निष्कर्ष

- **वर्तमान स्थिति (2024):** भारत की 40.4% आबादी (लगभग 60 करोड़ लोग) एक स्वस्थ आहार वहन करने में असमर्थ हैं।
- **पिछला आकलन (2021):** यह 2023 की एफएओ रिपोर्ट से एक सुधार दर्शाता है, जिसमें 2021 में 74.1% आबादी स्वस्थ आहार वहन करने में असमर्थ पाई गई थी।
- **डेटा पर टिप्पणी:** मुख्य अर्थशास्त्री के अनुसार, यह बदलाव एक बेहतर पद्धति के कारण है, लेकिन उन्होंने इसे "महत्वपूर्ण सुधार" माना है। साथ ही, उन्होंने जोर देकर कहा कि 40.4% अभी भी "बहुत अधिक" है।

भारत के लिए एफएओ की सिफारिशें

1. **खाद्य उत्पादन के विविधीकरण में तेजी लाना:**
 - **फोकस बदलाव:** मुख्य रूप से अनाज उत्पादन से हटकर उच्च-मूल्य वाली वस्तुओं (जैसे दालें, फल और सब्जियाँ) की खेती पर ध्यान केंद्रित करना।
 - **मुख्य उम्मीदवार:** दालों (पौष्टिक, प्रोटीन-युक्त और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक) तथा फलों और सब्जियों के उत्पादन को बढ़ावा देना।

- **मुख्य लक्ष्य:** यह बदलाव विविध और स्वस्थ आहार तक पहुँच बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण है।

2. परिवर्तन को जारी और तेज करना:

- भारत का आकार और जनसंख्या इसे 2030 तक वैश्विक सतत विकास लक्ष्य (जीरो हंगर) को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका देती है।
- हरित क्रांति के योगदान को स्वीकार किया गया है, लेकिन अब "और अधिक करने" की आवश्यकता है ताकि वर्तमान और भविष्य में स्वस्थ आहार की पहुँच सुनिश्चित हो सके।

मुख्य परीक्षा (Mains) में उपयोग कैसे करें

सामान्य अध्ययन पेपर II (GS-II) - शासन, सामाजिक न्याय

- **सामाजिक न्याय:** 40.4% भारतीयों का स्वस्थ आहार वहन न कर पाने का आंकड़ा असमानता का एक स्पष्ट संकेतक है और खाद्य एवं पोषण सुरक्षा प्रदान करने में विफलता को दर्शाता है, जो सामाजिक न्याय का एक मूल घटक है।
- **शासन:** एफएओ (FAO) की सिफारिशें सरकारी नीति के कृषि उत्पादन को निर्देशित करने में भूमिका को उजागर करती हैं। इसका उपयोग निम्नलिखित पर चर्चा करने के लिए किया जा सकता है:
 - **नीतिगत हस्तक्षेप:** कैसे सरकारी सब्सिडी (जैसे, अनाज के लिए) ने विषमताएं पैदा की हैं और विविधीकरण (जैसे, दालें, फल, सब्जियों की ओर) को प्रोत्साहित करने हेतु नीति की आवश्यकता है।
 - **एसडीजी का क्रियान्वयन:** सतत विकास लक्ष्य 2 (जीरो हंगर) को प्राप्त करने में भारत की प्रगति और चुनौतियाँ। यह आंकड़ा सुधार और आगे के लंबे रास्ते दोनों को दर्शाता है।

जीएस पेपर III (प्रौद्योगिकी, आर्थिक विकास, जैव-विविधता, पर्यावरण, सुरक्षा और आपदा प्रबंधन)

यह लेख जीएस-III के कृषि और खाद्य सुरक्षा खंडों के लिए महत्वपूर्ण डेटा और नीतिगत सुझाव प्रदान करता है।

- **खाद्य सुरक्षा:**
 - **डेटा बिंदु:** 40.4% भारतीयों (लगभग 60 करोड़) का स्वस्थ आहार वहन न कर पाने का मुख्य निष्कर्ष, खाद्य सुरक्षा (कैलोरी की उपलब्धता) और पोषण सुरक्षा (विविध, पौष्टिक भोजन तक पहुँच) के बीच की खाई का एक महत्वपूर्ण संकेतक है।
 - **चुनौती:** कैलोरी पर्याप्तता के बावजूद सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी यानी "छिपी भूख" की समस्या को उजागर करता है।
- **कृषि संबंधी मुद्दे:**
 - **नीतिगत विषमता:** साक्षात्कार संकेतिक तौर पर भारत की अनाज-केंद्रित नीति (हरित क्रांति से उत्पन्न) की आलोचना करता है, जिसके कारण:

- **कम विविधीकरण:** गेहूं और चावल पर अत्यधिक जोर, अधिक पौष्टिक फसलों की कीमत पर।
- **संसाधनों का दुरुपयोग:** पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में जल संकट और मृदा क्षरण में योगदान।
- **सुझाई गई दिशा:** एफएओ का मुख्य सुझाव उत्पादन को दालें, फल और सब्जियों जैसे उच्च-मूल्य, पोषक तत्वों से भरपूर उत्पादों की ओर विविधीकृत करना है।
- **बफर स्टॉक और खाद्य सुरक्षा के मुद्दे:**
 - अनाज के भंडारण पर ध्यान केंद्रित करने से आगे बढ़कर राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFSA) द्वारा अनिवार्य, खाद्यों की wider variety तक सस्ती पहुंच सुनिश्चित करने की आवश्यकता।
- **सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS):**
 - यह डेटा वर्तमान PDS की एक सीमा को रेखांकित करता है, जो मुख्य रूप से अनाज उपलब्ध कराती है। पोषण संबंधी परिणामों में सुधार के लिए दालों और तेलों को शामिल करने हेतु PDS बास्केट में विविधता लाने के तर्क को मजबूत करता है।
- **प्रौद्योगिकी:**
 - विविधीकरण के लिए फलों और सब्जियों जैसी नाशवान वस्तुओं के लिए post-harvest management, कोल्ड चेन और प्रसंस्करण में प्रौद्योगिकी और बुनियादी ढांचे में निवेश की आवश्यकता है।

5. एक अशांत विश्व में भारत की स्थिति

एम.के. नारायणन द्वारा (पूर्व निदेशक, इंटेलिजेंस ब्यूरो; पूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार; पूर्व राज्यपाल, पश्चिम बंगाल)

1. संदर्भ

- एक **फॉरेन अफेयर्स** लेख पर आधारित: *"India's Great Power Delusions—How New Delhi's Grand Strategy Thwarts Its Grand Ambitions"* (जुलाई/अगस्त 2025)।
- आलोचना के मुख्य बिंदु:
 - भारत में एक महाशक्ति बनने के **"महत्वाकांक्षी भ्रम"** हैं।
 - इसे सिद्ध करने के लिए पर्याप्त तथ्यों का अभाव है।
 - भारत की स्थिति **अमेरिका और चीन** की तुलना में **अनुकूल नहीं** है।

2. भारत-चीन तुलना

- भारत और चीन दोनों: **सभ्यतागत शक्तियाँ** हैं जिनके विकास के अलग-अलग मॉडल हैं।
- अमेरिका उन्हें मुख्य रूप से **प्रतिस्पर्धा/संघर्ष** के नज़रिए से देखता है।
- हाल की घटनाएँ (जैसे तियानजिन एससीओ शिखर सम्मेलन) इस ओर इशारा करती हैं:
 - पश्चिमी देश भारत, चीन और रूस को **एक गुट** के रूप में देखते हैं।

- अमेरिका को पूर्वी दृष्टिकोण को समझने में कठिनाई होती है।

3. भारत की यात्रा

- परिवर्तन:
 - स्वतंत्रता के समय अकालग्रस्त राष्ट्र → आत्मनिर्भर कृषि अर्थव्यवस्था → आधुनिक शक्ति।
 - आधुनिक इतिहास में कोई दूसरा उदाहरण नहीं।
- शक्तियाँ:
 - लोकतांत्रिक आधार।
 - समावेशी विकास पर जोर।
 - अनोखा विकास दर्शन (न पूरी तरह पूंजीवादी, न साम्यवादी)।
- सीमाएँ:
 - भारत संघर्ष नहीं चाहता, लेकिन किसी गुट में बंधने से सतर्क है।
 - भविष्य के संघर्षों में अमेरिकी सहायता पर निर्भर नहीं है।

4. पश्चिमी धारणाएँ

- अमेरिका अक्सर भारत की सभ्यतागत गहराई को गलत समझता है।
- शीत युद्ध का उदाहरण: भारत ने स्वतंत्र रुख बनाए रखा (गुटनिरपेक्ष आंदोलन, भारत-सोवियत संधि)।
- पश्चिमी देश भारत की क्षमता को कम आँकते हैं।

5. तकनीकी श्रेष्ठता

- वर्तमान वास्तविकता:
 - अमेरिका तकनीकी नवाचार में अग्रणी है ("मस्तिष्क का साम्राज्य")।
 - लेकिन अमेरिकी नीतियों में विरोधाभास इसकी वैश्विक प्रभावशीलता को कमजोर करते हैं।
- भारत के लाभ:
 - मजबूत डिजिटल विकास।
 - AI, डिजिटल अर्थव्यवस्था और नई तकनीकों में महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में उभर रहा है।
 - भारत का जनसांख्यिकीय लाभांश नवाचार को बढ़ावा देता है।

6. प्रमुख चुनौतियाँ

- विरोधाभासी संबंधों का प्रबंधन:
 - अमेरिका के साथ (रणनीतिक साझेदार, लेकिन अमेरिकी दबाव से सतर्क)।
 - चीन के साथ (प्रतिस्पर्धा + सहयोग)।
 - रूस के साथ (ऊर्जा निर्भरता)।
- गुटों (अमेरिका-नेतृत्व वाला पश्चिम बनाम चीन-रूस धुरी) के बीच अपनी स्थिति तय करना।

7. लेखक का तर्क

- भारत का उदय नया लेकिन मजबूत है, जो अपनी सभ्यतागत लचीलापन और स्वतंत्र नीति पर आधारित है।
- पश्चिम को पुरानी मान्यताओं पर पुनर्विचार करना चाहिए:
 - भारत को केवल महाशक्ति प्रतिस्पर्धा का मोहरा समझना बंद करें।
 - भारत के अंतर्निहित विकास और क्षमता को पहचानें।
- भारत नए विश्व व्यवस्था का "अनुयायी" नहीं, बल्कि "निर्माता" बनेगा।

मुख्य परीक्षा (Mains) में उपयोग कैसे करें

जीएस पेपर II (शासन, संविधान, राजव्यवस्था, सामाजिक न्याय एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंध)

यह लेख भारत की विदेश नीति पर एक सीधी टिप्पणी है, जिसके कारण यह अंतर्राष्ट्रीय संबंध खंड के लिए अत्यधिक प्रासंगिक है।

- **भारत और इसके पड़ोसी/विश्व:** संपूर्ण लेख अमेरिका-चीन प्रतिद्वंद्विता और बदलती वैश्विक व्यवस्था के संदर्भ में भारत की स्थिति का विश्लेषण करता है।
 - **सामरिक स्वायत्तता:** लेखक भारत की स्वतंत्र विदेश नीति रख का बचाव करता है, जो इसके इतिहास (गुटनिरपेक्ष आंदोलन, भारत-सोवियत संधि) और सभ्यतागत गहराई में निहित है। यह पश्चिमी आलोचनाओं के जवाब में है जो भारत को "ग्रेडियर के भ्रम" से ग्रस्त बताते हैं।
 - **द्विपक्षीय संबंध:** भारत के जटिल और "विरोधाभासी" संबंधों का विश्लेषण करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है:
 - **अमेरिका के साथ:** एक सामरिक साझेदारी, लेकिन ऐसी जहाँ भारत "गठबंधन के लिए मजबूर किए जाने से सावधान" है और अपनी स्वतंत्रता पर जोर देता है।
 - **चीन के साथ:** प्रतिस्पर्धा (निहित सीमा तनाव) और सहयोग (एससीओ जैसे मंचों के भीतर) का मिश्रण।
 - **रूस के साथ:** ऐतिहासिक संबंधों और व्यावहारिक आवश्यकताओं (जैसे "ऊर्जा निर्भरता") पर आधारित एक निरंतर चलने वाला संबंध।
 - **पश्चिम का दृष्टिकोण:** एक प्रमुख चुनौती को उजागर करता है: पश्चिम अक्सर "भारत की सभ्यतागत गहराई को गलत समझता है" और "भारत की क्षमता को कम आंकता है", उसे केवल चीन का मुकाबला करने के नजरिए से देखता है।